DATE 4.11.24
PAGE No. 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-13 'सूरदास के पद') भाग 1
कवि- सूरदास
पुस्तक- नवतरंग-7

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा सातवीं की पुस्तक नवतरंग-7 के पृष्ठ 109 पर दिए पाठ-13 'सूरदास के पद' पढ़ेंगे।

सब बच्चे पढ़ने को तैयार हो जाएं। पहले मैं यह पद पढ़ूँगी फिर उसका सरलार्थ बताऊँगी।

बच्चो! महाकवि सूरदास जी द्वारा रचित ये पद श्री कृष्ण के बाल-रूप और उनकी बाल लीलाओं से ओत-प्रोत हैं। वे कृष्ण भक्त थे। इस प्रथम पद में श्रीकृष्ण माँ यशोदा के डाँटने पर अपनी सफाई पेश करते हैं क्योंकि गोपियों की शिकायत पर कि कृष्ण उनका मक्खन चुराकर खा जाता है, माता यशोदा बालक कृष्ण को डाँटती हैं। कृष्ण कहते हैं—

मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो,
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुवन मोहिं पठायो।
चार पहर बंसीबट भटक्यो, साँझ परे घर आयो॥
मैं बालक बहियन को छोटो, छींको किहि बिधि पायो।
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो॥

इन पंक्तियों में सूरदास जी हैं कि जब माँ यशोदा ने गोपियों का माखन चुराए जाने की शिकायत पर उन्हें डाँटा तो कृष्ण बोले—हे माँ! मैंने मक्खन नहीं खाया है। तुम मुझे सुबह होते ही गायों के पीछे जंगल में भेज देती हो। मैं चार पहर तक बाँसुरी लेकर

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner

4.11.24

DATE
PAGE No. 2

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ - 13 'सूरदास के पद')

वट वृक्ष पर और वृंदावन (मधुवन) में गायों को चराता हुआ इधर से उधर भटकता फिरता हूँ और शाम होने पर ही घर आता हूँ।

बच्चो! श्रीकृष्ण अपनी माता से फिर कह रहे हैं - हे मेरी मैया! मैं छोटी-छोटी बाँहों वाला छोटा बालक हूँ। मैं ऊँचे छींके पर रखे मक्खन की हाँडी तक कैसे पहुँच सकता हूँ?

ये सब मेरे ग्वाले सखा मुझसे द्वेष (शत्रुता) रखते हैं, इसलिए इन्होंने मेरे मुख पर जबरदस्ती मक्खन लिपटा दिया है।

माँ! तू तो मन की बहुत भोली है अर्थात् सीधी है जो इन ग्वाल-बालों की कही बातों के बहकावे में आ गई।

बच्चो! अब मैं आगे की पंक्तियाँ पढ़ रही हूँ -

तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहे पतिआयो।
जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो॥
यह लै अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो।
'सूरदास' तब बिहँसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो॥

बच्चो! इस प्रकार अपने सखाओं को दोषी ठहराते हुए स्वयं को माँ के सामने निर्दोष बता रहे हैं।

वे माता यशोदा से कहते हैं - मैया! तेरे मन में मेरे प्रति अवश्य ही कोई भेद उत्पन्न हो गया है। मैया! ऐसा लगता है जैसे तूने मुझे जन्म नहीं दिया है बल्कि किसी दूसरी माँ ने जन्म दिया है। तू मुझे पराया समझती है। माँ! यह ले अपनी लाठी और कंबल रख। इन्होंने और तूने मुझे बहुत नाच नचाया है। अब मैं गाय चराने नहीं जाऊँगा।

सूरदास जी कहते हैं, तब यशोदा माँ ने हँसकर श्रीकृष्ण को अपने गले से लगा लिया।

बच्चो! आज हम इस पद को यहीं समाप्त करते हैं। इसका शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दूँगी।

गृहकार्य :- सब बच्चे पृष्ठ - 110 पर दिए शब्दार्थ को अपनी हिंदी साहित्य की अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे और याद करेंगे।

(अंतिम पृष्ठ - 2)

Scanned with CamScanner